REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 6 | MARCH - 2026

रीवा जिले की ग्रामीण महिलाओं में शिक्षा के प्रसार और सामाजिक परिवर्तन का अध्ययन

रेखा सोनी
शोधार्थी समाजशास्त्र
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

डॉ. आर.के. सोनी
प्राध्यापक समाजशास्त्र
पंडित शंभूनाथ शुक्ल विश्वविद्यालय, शहडोल (म.प्र.)

सारांश –

शिक्षा किसी भी समाज के समग्र विकास तथा सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया का एक प्रमुख आधार मानी जाती है। विशेष रूप से ग्रामीण समाज के संदर्भ में महिलाओं की शिक्षा सामाजिक जागरूकता, आर्थिक सशक्तिकरण तथा लैंगिक समानता की स्थापना में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य मध्य प्रदेश के रीवा जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के मध्य शिक्षा के प्रसार तथा उसके परिणामस्वरूप उत्पन्न सामाजिक परिवर्तन का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना है। भारतीय ग्रामीण समाज में लंबे समय तक महिलाओं की शिक्षा को अपेक्षित महत्व नहीं दिया गया, जिसके परिणामस्वरूप उनकी सामाजिक स्थिति अपेक्षाकृत निम्न स्तर पर बनी रही। पारंपरिक सामाजिक संरचना, पितृसत्तात्मक व्यवस्था तथा आर्थिक सीमाओं के कारण महिलाओं के लिए शिक्षा प्राप्त करने के अवसर सीमित रहे। किंतु वर्तमान समय में बदलते सामाजिक परिवेश, शैक्षिक जागरूकता में वृद्धि तथा विभिन्न सरकारी योजनाओं और कार्यक्रमों के प्रभाव से ग्रामीण क्षेत्रों में महिला शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हुआ है। प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक आँकड़े चयनित ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं से प्रश्नावली, साक्षात्कार तथा प्रत्यक्ष अवलोकन की विधियों के माध्यम से संकलित किए गए हैं, जबकि द्वितीयक जानकारी विभिन्न सरकारी रिपोर्टों, जनगणना आँकड़ों, पुस्तकों तथा शोध–पत्रों से प्राप्त की गई है। अध्ययन के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा के प्रसार ने ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक स्थिति, आत्मविश्वास, निर्णय–निर्माण क्षमता तथा आर्थिक भागीदारी में महत्वपूर्ण सुधार किया है। शिक्षित महिलाएँ अब परिवार के महत्वपूर्ण निर्णयों, जैसे बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, घरेलू व्यय तथा सामाजिक गतिविधियों से संबंधित निर्णयों में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। इसके अतिरिक्त शिक्षा के कारण महिलाओं में अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता में वृद्धि हुई है तथा वे सामाजिक एवं सामुदायिक गतिविधियों में भी अधिक सहभागिता करने लगी हैं। इस प्रकार शिक्षा के माध्यम से ग्रामीण समाज में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया क्रमशः विकसित होती हुई दिखाई देती है। यद्यपि गरीबी, पारंपरिक सामाजिक मान्यताएँ, शैक्षिक संसाधनों की कमी तथा जागरूकता का अभाव जैसी समस्याएँ अभी भी महिला शिक्षा के मार्ग में बाधक बनी हुई हैं, तथापि विभिन्न सरकारी योजनाओं, सामाजिक संगठनों तथा शिक्षा के प्रसार के परिणामस्वरूप ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक स्थिति में निरंतर सुधार परिलक्षित हो रहा है। अतः यह आवश्यक है कि महिला शिक्षा को और अधिक प्रोत्साहन प्रदान किया जाए, जिससे ग्रामीण समाज में लैंगिक

समानता, महिला सशक्तिकरण तथा सतत् सामाजिक विकास को सुनिश्चित किया जा सके।

मुख्य शब्द – ग्रामीण महिला, शिक्षा, सामाजिक परिवर्तन, महिला सशक्तिकरण, लैंगिक समानता एवं रीवा जिला।

प्रस्तावना –

शिक्षा मानव जीवन के विकास का मूल आधार मानी जाती है। यह केवल ज्ञान अर्जन का माध्यम ही नहीं है, बल्कि व्यक्ति के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास की आधारशिला भी है। शिक्षा व्यक्ति को सोचने, समझने और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को पहचानने की क्षमता प्रदान करती है। किसी भी समाज की प्रगति उसके नागरिकों के शैक्षिक स्तर पर निर्भर करती है। यदि समाज में शिक्षा का स्तर उच्च होता है, तो वहाँ सामाजिक चेतना, आर्थिक उन्नति और सांस्कृतिक विकास भी अधिक सुदृढ़ रूप में दिखाई देता है। विशेष रूप से महिलाओं की शिक्षा को समाज के समग्र विकास का महत्वपूर्ण आधार माना जाता है, क्योंकि शिक्षित महिला न केवल स्वयं के जीवन को बेहतर बनाती है बल्कि अपने परिवार और आने वाली पीढ़ियों के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देती है।[1]

महिला शिक्षा का महत्व इस तथ्य से भी स्पष्ट होता है कि शिक्षित महिला परिवार के स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा और सामाजिक मूल्यों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वह अपने बच्चों के भविष्य को बेहतर बनाने के लिए अधिक जागरूक रहती है तथा परिवार के संसाधनों का उचित उपयोग करने में सक्षम होती है। इसके अतिरिक्त शिक्षा महिलाओं में आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता और सामाजिक चेतना का विकास करती है। इसलिए आधुनिक समाज में महिला शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण माध्यम माना जाता है।[2]

भारतीय समाज की ऐतिहासिक संरचना में लंबे समय तक महिलाओं की शिक्षा को अपेक्षित महत्व नहीं दिया गया। पारंपरिक सामाजिक मान्यताओं और पितृसत्तात्मक व्यवस्था के कारण महिलाओं को घर की चारदीवारी तक सीमित माना जाता था। ग्रामीण समाज में यह स्थिति और भी अधिक जटिल थी, जहाँ महिलाओं के लिए शिक्षा प्राप्त करने के अवसर अत्यंत सीमित थे। कई परिवारों में यह धारणा प्रचलित थी कि लड़कियों को अधिक शिक्षा देने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि उनका मुख्य कार्य घरेलू जिम्मेदारियों का निर्वहन करना है। इसके अतिरिक्त आर्थिक कठिनाइयाँ, सामाजिक प्रतिबंध, विद्यालयों की कमी तथा परिवहन की समस्या भी ग्रामीण क्षेत्रों में महिला शिक्षा के विकास में बाधक रही हैं।[3]

इन परिस्थितियों के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की साक्षरता दर लंबे समय तक निम्न स्तर पर बनी रही। शिक्षा के अभाव के कारण महिलाएँ अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति पर्याप्त रूप से जागरूक नहीं हो पाती थीं। परिणामस्वरूप उनकी सामाजिक स्थिति अपेक्षाकृत कमजोर रही और वे परिवार तथा समाज के महत्वपूर्ण निर्णयों में सीमित भूमिका निभा पाती थीं। पिछले कुछ दशकों में भारतीय समाज में महिला शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में उल्लेखनीय परिवर्तन देखने को मिला है। शिक्षा के महत्व के प्रति बढ़ती जागरूकता, सरकारी नीतियों तथा सामाजिक संगठनों के प्रयासों के कारण महिलाओं की शिक्षा को प्रोत्साहन मिला है। केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न कार्यक्रम–बालिका शिक्षा योजनाएँ, छात्रवृत्ति योजनाएँ, मध्यान्ह भोजन योजना तथा "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" अभियान ने ग्रामीण क्षेत्रों में भी लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।[4]

मध्य प्रदेश के रीवा जिले में भी महिला शिक्षा के क्षेत्र में पिछले कुछ वर्षों में उल्लेखनीय प्रगति देखने को मिली है। यह जिला मुख्यतः ग्रामीण क्षेत्र है, जहाँ की अधिकांश जनसंख्या कृषि और उससे संबंधित गतिविधियों पर निर्भर करती है। पारंपरिक सामाजिक संरचना के कारण यहाँ लंबे समय तक महिला शिक्षा का स्तर अपेक्षाकृत कम रहा।[5] किंतु वर्तमान समय में शिक्षा के प्रति बढ़ती जागरूकता, विद्यालयों की संख्या में वृद्धि, छात्रवृत्ति योजनाओं की उपलब्धता तथा सरकारी प्रयासों के कारण ग्रामीण परिवारों में अपनी बेटियों को शिक्षित करने की प्रवृत्ति बढ़ी है।

विश्लेषण –

प्रस्तुत अध्ययन में रीवा जिले के चयनित ग्रामीण क्षेत्रों से कुल 200 ग्रामीण महिलाओं का चयन किया गया है। एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत विधि के आधार पर किया गया है। निम्नलिखित सारणियों के

माध्यम से महिलाओं की शिक्षा, सामाजिक भागीदारी तथा सामाजिक परिवर्तन की स्थिति को समझने का प्रयास किया गया है –

सारणी क्रमांक 1

उत्तरदात्री महिलाओं का आयु वर्ग के आधार पर वर्गीकरण

क्र.	आयु वर्ग	संख्या	प्रतिशत
1	18–25 वर्ष	50	25
2	26–35 वर्ष	70	35
3	36–45 वर्ष	45	22.5
4	46 वर्ष से अधिक	35	17.5
	कुल	200	100

स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि अध्ययन में शामिल अधिकांश महिलाएँ 26–35 वर्ष आयु वर्ग की हैं, जिनका प्रतिशत 35 है। यह आयु वर्ग सामाजिक और पारिवारिक गतिविधियों में सबसे अधिक सक्रिय माना जाता है। 18–25 वर्ष की महिलाओं का प्रतिशत 25 है, जो युवा पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करता है और जिनमें शिक्षा के प्रति जागरूकता अपेक्षाकृत अधिक देखी गई। 36–45 वर्ष की महिलाओं का प्रतिशत 22.5 है, जबकि 46 वर्ष से अधिक आयु वर्ग की महिलाओं का प्रतिशत 17.5 पाया गया। यह आयु वर्ग पारंपरिक सामाजिक संरचना से अधिक प्रभावित रहा है, इसलिए इनके शैक्षिक स्तर में अपेक्षाकृत कमी देखने को मिलती है। इस प्रकार आयु वर्ग के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि युवा महिलाओं में शिक्षा का प्रसार अपेक्षाकृत अधिक हो रहा है।

सारणी क्रमांक 2

महिलाओं की पारिवारिक निर्णयों में भागीदारी

क्र.	भागीदारी का स्तर	संख्या	प्रतिशत
1	पूर्ण भागीदारी	70	35
2	आंशिक भागीदारी	85	42.5
3	बहुत कम	30	15
4	कोई भागीदारी नहीं	15	7.5
	कुल	200	100

स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि शिक्षा के प्रसार के कारण महिलाओं की पारिवारिक निर्णयों में भागीदारी बढ़ी है। 35 प्रतिशत महिलाएँ परिवार के निर्णयों में पूर्ण रूप से भाग लेती हैं, जबकि 42.5 प्रतिशत महिलाएँ आंशिक रूप से भागीदारी करती हैं। केवल 15 प्रतिशत महिलाओं की भागीदारी बहुत कम पाई गई, जबकि 7.5 प्रतिशत महिलाएँ किसी भी निर्णय में भाग नहीं लेतीं। यह स्थिति पारंपरिक पितृसत्तात्मक व्यवस्था के प्रभाव को दर्शाती है। फिर भी अधिकांश महिलाएँ किसी न किसी रूप में निर्णय प्रक्रिया का हिस्सा बन रही हैं, जो सामाजिक परिवर्तन का संकेत है।

सारणी क्रमांक 3

शिक्षा से महिलाओं के जीवन में आए परिवर्तन

क्र.	परिवर्तन का क्षेत्र	संख्या	प्रतिशत
1	आत्मविश्वास में वृद्धि	80	40
2	सामाजिक जागरूकता	50	25
3	आर्थिक भागीदारी	40	20
4	पारिवारिक निर्णयों में भागीदारी	30	15
	कुल	200	100

स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि शिक्षा के कारण महिलाओं के जीवन में कई सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिले हैं। 40 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि शिक्षा के कारण उनके आत्मविश्वास में वृद्धि हुई है। 25 प्रतिशत महिलाओं ने सामाजिक जागरूकता में वृद्धि को प्रमुख परिवर्तन माना। इसके अतिरिक्त 20 प्रतिशत महिलाओं ने आर्थिक गतिविधियों में भागीदारी को महत्वपूर्ण परिवर्तन बताया, जबकि 15 प्रतिशत महिलाओं ने पारिवारिक निर्णयों में अपनी भूमिका को महत्वपूर्ण माना।

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा ग्रामीण महिलाओं के जीवन में बहुआयामी परिवर्तन ला रही है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि रीवा जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की शिक्षा के प्रसार ने सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है। शिक्षा ने न केवल महिलाओं के ज्ञान और जागरूकता में वृद्धि की है, बल्कि उनके सामाजिक, आर्थिक और पारिवारिक जीवन में भी सकारात्मक परिवर्तन लाया है। अध्ययन के परिणामों से यह ज्ञात होता है कि युवा पीढ़ी की महिलाओं में शिक्षा के प्रति अधिक जागरूकता देखने को मिलती है। पहले के समय में ग्रामीण समाज में लड़कियों की शिक्षा को अधिक महत्व नहीं दिया जाता था, किंतु वर्तमान समय में परिवारों की सोच में परिवर्तन आया है। अब माता–पिता अपनी बेटियों को विद्यालय भेजने के लिए अधिक उत्सुक दिखाई देते हैं। सरकारी योजनाएँ, छात्रवृत्तियाँ तथा सामाजिक जागरूकता कार्यक्रम भी इस परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

महिला शिक्षा का प्रभाव उनके आत्मविश्वास और सामाजिक स्थिति पर भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। शिक्षित महिलाएँ अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति अधिक जागरूक होती हैं। वे अपने बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य और भविष्य के बारे में अधिक संवेदनशील होती हैं। इसके अतिरिक्त वे सामाजिक समस्याओं के प्रति भी जागरूक रहती हैं और समाज के विकास में सक्रिय भूमिका निभाती हैं। अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि शिक्षा के कारण महिलाओं की पारिवारिक निर्णयों में भागीदारी बढ़ी है। पहले जहाँ परिवार के महत्वपूर्ण निर्णय केवल पुरुषों द्वारा लिए जाते थे, वहीं अब शिक्षित महिलाएँ भी इन निर्णयों में अपनी राय देने लगी हैं। इससे परिवार में लोकतांत्रिक वातावरण का विकास होता है और महिलाओं की सामाजिक स्थिति मजबूत होती है।

आर्थिक दृष्टि से भी महिला शिक्षा का सकारात्मक प्रभाव देखने को मिलता है। शिक्षित महिलाएँ स्वरोजगार, लघु उद्योग तथा विभिन्न सरकारी योजनाओं के माध्यम से आर्थिक गतिविधियों में भाग ले रही हैं। इससे न केवल उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार होता है, बल्कि परिवार की आय में भी वृद्धि होती है। अध्ययन के दौरान यह भी पाया गया कि ग्रामीण क्षेत्रों में महिला शिक्षा के मार्ग में अभी भी कई समस्याएँ मौजूद हैं। इनमें गरीबी, सामाजिक रूढ़ियाँ, बाल विवाह, शिक्षा के संसाधनों की कमी तथा जागरूकता का अभाव प्रमुख हैं। कई ग्रामीण परिवारों में आज भी लड़कियों की शिक्षा को उतना महत्व नहीं दिया जाता जितना लड़कों की शिक्षा को दिया जाता है। फिर भी यह कहा जा सकता है कि पिछले कुछ वर्षों में महिला शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। सरकारी योजनाएँ–बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, छात्रवृत्ति योजनाएँ और निःशुल्क शिक्षा कार्यक्रमों ने महिला शिक्षा को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अध्ययन के परिणाम यह दर्शाते हैं कि शिक्षा ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। यदि महिला शिक्षा को और अधिक प्रोत्साहन दिया जाए तथा सामाजिक बाधाओं को दूर किया जाए, तो ग्रामीण समाज में व्यापक सामाजिक परिवर्तन संभव है।

निष्कर्ष:

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि रीवा जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की शिक्षा के प्रसार ने सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है। शिक्षा ने ग्रामीण महिलाओं के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने का कार्य किया है, जिससे उनकी सामाजिक स्थिति, आत्मविश्वास और जागरूकता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। पहले जहाँ महिलाएँ केवल घरेलू कार्यों तक सीमित मानी जाती थीं, वहीं अब शिक्षित महिलाएँ परिवार के महत्वपूर्ण निर्णयों, बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल तथा आर्थिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेने लगी हैं। इससे न केवल महिलाओं के व्यक्तित्व का विकास हुआ है, बल्कि परिवार और समाज के समग्र विकास में भी उनका योगदान बढ़ा है। शिक्षा के प्रभाव से महिलाओं में अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता आई है तथा वे सामाजिक और सामुदायिक गतिविधियों में भी अधिक सक्रियता के साथ भागीदारी करने लगी हैं। महिला शिक्षा ग्रामीण समाज में लैंगिक समानता और सामाजिक न्याय की दिशा में एक महत्वपूर्ण

आधार प्रदान करती है। शिक्षित महिलाएँ न केवल अपने परिवार के जीवन स्तर को सुधारने में सहायक होती हैं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के भविष्य को भी बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि महिला शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सरकार, सामाजिक संस्थाओं और समुदायों द्वारा संयुक्त रूप से प्रयास किए जाएँ। विद्यालयों की संख्या में वृद्धि, शिक्षा के बुनियादी ढाँचे का विकास, छात्रवृत्ति योजनाओं का विस्तार तथा ग्रामीण समाज में शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने जैसे कदम इस दिशा में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। यदि इन प्रयासों को प्रभावी रूप से लागू किया जाए, तो भविष्य में ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक स्थिति और अधिक सुदृढ़ होगी तथा समाज में व्यापक और स्थायी सामाजिक परिवर्तन संभव हो सकेगा।

संदर्भ –

[1] अग्रवाल, जे.सी. – भारतीय शिक्षा का विकास और समस्याएँ, नई दिल्ली : विकास पब्लिशिंग हाउस, 2009, पृष्ठ 15

[2] दुबे, श्यामाचरण – भारतीय समाज, नई दिल्ली : राष्ट्रीय प्रकाशन, 2001, पृष्ठ 82

[3] देसाई, ए.आर. – भारतीय ग्रामीण समाजशास्त्र, मुंबई : पॉपुलर प्रकाशन, 1994, पृष्ठ 134.

[4] भारत सरकार, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट, नई दिल्ली : प्रकाशन विभाग, 2020, पृष्ठ 56

[5] सिंह, योगेन्द्र – आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन, नई दिल्ली : रावत पब्लिकेशन्स, 2012, पृष्ठ 102